

आईआईएम के दीक्षांत समारोह में 268 डिग्रियां बंटी

रांची | प्रमुख संवाददाता

भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची का आठवां दीक्षांत समारोह शनिवार को खेलगांव स्थित डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन के सभागार में आयोजित किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री जयंत सिन्हा मौजूद थे। इसमें सत्र 2017-19 की 268 डिग्रियां बंटी। इनमें एमबीए की- 179, एचआरएम की- 62, एक्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट (पीजीईएक्सपी) की- 27 डिग्रियां/डिप्लोमा शामिल हैं। इसके अलावा आठ पीएचडी उपाधि प्रदान की गई।

समारोह की शुरुआत शैक्षणिक शोभा यात्रा से हुई। इसमें जयंत सिन्हा के अलावा संस्थान के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के सदस्य, निदेशक डॉ शैलेंद्र सिंह और सभी विभागों के अध्यक्ष ने हिस्सा लिया। इसके बाद निदेशक डॉ शैलेंद्र सिंह ने संस्थान की उपलब्धियां गिनाईं। उन्होंने बताया कि सत्र 2017-19 के 8.75 से अधिक सीजीपीए प्राप्त करनेवाले चार छात्रों को रोल ऑफ ऑनर, दिया गया। साथ ही, संस्थान के शिक्षकों के 30 शोधपत्रों का प्रकाशन राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में हुआ। उन्होंने बताया कि आईआईएम रांची की ओर से कई पहल की जा रही है। इसके तहत अटल बिहारी वाजपेयी सेंटर ऑन लीडरशिप, पॉलिसेरी एंड गवर्नेंस और बिरसा मुंडा सेंटर फॉर ट्राइबल स्टडीज की शुरुआत हुई है, जो आदिवासी समुदायों के बीच कौशल विकास पर केंद्रित है। इसके अलावा संस्थान के स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए 8 विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ समझौता हुआ है। संस्थान का प्लेसमेंट भी शत-प्रतिशत रहा। उन्होंने आईआईएम के निर्माणाधीन कैम्पस का जिक्र करते हुए कहा कि इसके लिए एचडीसी क्षेत्र में 60.4 एकड़ जमीन मिली है, 2021 में होनेवाला 10वां दीक्षांत समारोह नए कैम्पस में ही आयोजित होगा।

मुख्य अतिथि जयंत सिन्हा ने छात्रों और उनके अभिभावकों व शिक्षकों को बधाई दी। इसके बाद उन्होंने प्रबंधन के विद्यार्थियों को भारतीय अर्थव्यवस्था की उपलब्धियां गिनाईं। उन्होंने कहा सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण, भारत पिछले कुछ वर्षों में तेजी से आगे बढ़ा है। जीडीपी के मामले में भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में खड़ा है। उन्होंने कहा कि हम 3-4 प्रतिशत की मुद्रास्फीति दर के मुकाबले 7 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे हैं। उन्होंने उत्पादक क्षमता बढ़ाने के लिए सरकार



डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन सभागार में आयोजित आईआईएम के दीक्षांत समारोह में केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री जयंत सिन्हा ने विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की।

सौरभ दास को मंच से उतरकर दी डिग्री

एमबीए- मार्केटिंग एंड स्ट्रेटेजी में डिग्री प्राप्त करनेवाले निःशक्त सौरभ दास का सबसे तालियों से होसला बढ़ाया। सौरभ को उपाधि देने के लिए जयंत सिन्हा, निदेशक शैलेंद्र सिंह और आईआईएम गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष प्रवीण शंकर पंड्या मंच से नीचे उतर आए।



की उपलब्धियां गिनाईं। उन्होंने कहा सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण, भारत पिछले कुछ वर्षों में तेजी से आगे बढ़ा है। जीडीपी के मामले में भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में खड़ा है। उन्होंने कहा कि हम 3-4 प्रतिशत की मुद्रास्फीति दर के मुकाबले 7 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे हैं। उन्होंने उत्पादक क्षमता बढ़ाने के लिए सरकार

की ओर से किए गए संरचनात्मक सुधारों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने चार प्रमुख संरचनात्मक सुधारों के बारे में सबका ध्यान आकृष्ट किया, कहा कि इन पर भारतीयों को ध्यान देना चाहिए- मौद्रिक नीति, मुद्रास्फीति लक्ष्यकरण, जिसका हमारे जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है, अन्य प्रमुख संरचनात्मक सुधार, जो ईएमआई को कम करने और

15

मेधावियों को दिया गया पुरस्कृत

08

विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ संस्थान के स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए समझौता हुआ है

2017-19 के 8.75 से अधिक सीजीपीए प्राप्त करनेवाले चार छात्रों को रोल ऑफ ऑनर, दिया गया

जीएसटी की शुरुआत करने के लिए अग्रणी हैं, अग्रणी कर पर अधिक कर नहीं। उन्होंने कहा कि कर चोरी कम हुई है और कर भुगतान क्षमता में वृद्धि हुई है, साथ ही कर संग्रह में सुधार हुआ है।

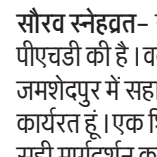
उन्होंने कनेक्टिविटी और टेलीकॉम में दो अन्य बड़े संरचनात्मक सुधारों उल्लेख किया। कहा कि देश में केवल 70 हवाई अड्डे थे, लेकिन मोदी सरकार में जब उन्होंने पदभार संभाला, उसके बाद निर्धारित सेवाओं के साथ 100 हवाई अड्डे हैं। सरकार ने पांच वर्षों में एक वर्ष में 5-10 हवाई अड्डे जोड़े और रांची हवाई अड्डे की उड़ानों की संख्या 32 तक बढ़ा दी गई है।

आईआईएम के गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष प्रवीण शंकर पंड्या ने देश की क्षमता के बारे में बात की। उन्होंने बताया हम विनिर्माण में पिछड़े रहे हैं, जिससे आयात पर हमारी निर्भरता बढ़ रही है। चीन इस क्षेत्र में हावी है। कहा कि भारतीय उद्योग को विनिर्माण क्षेत्र में अवसर विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि युवा दिमाग को उद्यमी बनना चाहिए और छात्रों को अपने लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। साथ ही, यह सुझाव भी दिया कि मुकाबला हमेशा खुद से होना चाहिए।

मेधावियों ने लक्ष्य साझा किया



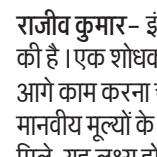
नितिन वर्मा- पीएचडी पूरा करने के बाद अब आगे का लक्ष्य युवाओं का सशक्तीकरण और देश निर्माण में योगदान देना है। महंगी शिक्षा अमर वंचित वर्ग के काम आए, तभी उसकी सार्थकता है।



सौरभ रनेहवत- स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट में पीएचडी की है। वर्तमान में एक्सएलआरआई, जमशेदपुर में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हूँ। एक शिक्षक के रूप में युवाओं का सही मार्गदर्शन करना लक्ष्य है।



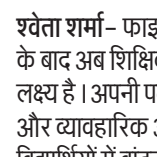
अनिन्दिता घोष- मेरी पीएचडी एक संस्थान के एचआर की कार्यप्रणाली के लिए न्युरो साइंस के इस्तेमाल पर आधारित है। आगे का लक्ष्य अमेरिका के किसी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से डीलिट करना है।



राजीव कुमार- इंफॉर्मेशन सिस्टम में पीएचडी की है। एक शोधकर्ता और शिक्षक के रूप में आगे काम करना चाहता हूँ। विद्यार्थियों को मानवीय मूल्यों के साथ व्यावहारिक शिक्षा कैसे मिले, यह लक्ष्य होगा।



प्रदीप कुमार- मेरा विषय हेल्थ केयर सर्विसेस रहा। झारखंड और जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में अपनी सेवा देना चाहता हूँ। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें बहुत ज्यादा काम करने की जरूरत है।



श्वेता शर्मा- फाइनांस में पीएचडी पूरी करने के बाद अब शिक्षिका के रूप में काम करना लक्ष्य है। अपनी पढ़ाई के दौरान जो सैद्धांतिक और व्यावहारिक अनुभव हुए, उन्हें अपने विद्यार्थियों में बांटना चहूँगी।



कौस्तन साहा- मेरा विषय स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट रहा। शिक्षक के रूप में समाज और देशनिर्माण में योगदान देना चाहता हूँ। प्रबंधन ऐसा क्षेत्र है, जहां किताबी ज्ञान से अधिक व्यावहारिक पहलुओं को समझना जरूरी है।



खेलगांव स्थित डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन परिसर में शनिवार को डिग्री लेने के बाद आईआईएम के विद्यार्थियों ने टोपी को हवा में उछाल अपनी खुशी का इजहार किया।